ISSN 2349-638x
Impact Factor 5.707

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

PEER REVIEW & INDEXED JOURNAL
Email id : aiirjpramod@gmail.com
www.aiirjournal.com

SPECIAL ISSUE No. 45

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

Executive Editor
Dr. S.M. Maner
Principal
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Co-Editor
Prof. V. H. Chavan
Dept. of Hindi
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Chief Editor
Prof. Pramod Tandale

Scanned by CamScanner

Sr.No.	Author Name	Title of Article / Research Paper	Page No.
42.	डॉ उत्तम राजाराम आळतेकर	संवेदना का सरोकार कराती इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता	108
43.	प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण	बाज़ारवाद की चुनौतियों पर चिंतन करती हिंदी लघुकथा	112
44.	डॉ.विट्ठल शंकर नाईक प्रा.सुषमा प्रफुल्ल नामे	हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श	116
45.	प्रा.डॉ.प्रवीण कांबळे	लघुकथाओं में चित्रित नेताओं की चरित्र-हीनता	119
46.	डॉ. सुनिता रामभाऊ हजारे	शिवानी की कहानी 'करिए छिमा' के सन्दर्भ में	120
47.	प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार	आदिवासीयों की करुण गाथा – 'अल्मा कबूतरी'	121
48.	अभिनव कुमार	हुल पहड़िया: पहाड़िया आदिवासियों के चिरकालीन स्वाधीन चेतना की साहित्यिक अभिव्यक्ति	123
49.	प्रा. जे. बी. जाधव	मोहनदास नैमिशराय का उपन्यास,'ज़ख़्म हमारे में' दलित विमर्श	125
50.	प्रा. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे	21 वे सदी के हिंदी गद्य साहित्य में बाजारवाद विमर्श	128
51.	लक्ष्मी किसनराव मनशेट्टी	दलित जीवन की दर्दनाक दास्तान – मुक्तिपर्व	130
52.	प्रा.प्रतापसिंग राजपूत	21 वीं सदी के उपन्यास में चित्रित किसान जीवन	133
53.	डॉ. मंत्री रामधन आडे	21 वीं सदी का हिन्दी गदय साहित्य और स्त्री विमर्श	135
54.	डॉ. विनय सु.चौधरी	21 वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में दलित विमर्श	138
55.	प्रा. संतोष तुकाराम बंडगर	'डबल इनकम नो किड्स': महानगरीय नारी की बदलती पारिवारिक प्रवृत्तियाँ	140
56.	प्रा. सुधाकर इंडी	रमणिका गुप्ता के उपन्यासों में आदिवासी स्त्री विमर्श	142
57.	प्रा. विश्वनाथ भालचंद्र सुतार	हिंदी कविता में नारी लेखन के विविध स्वर	145
58.	प्रा.डॉ.संभाजी रामू निकम	आधुनिक परिवेश में नौकरीपेशा स्त्री के प्रति देहवादी दृष्टिकोण :'कुत्ते' नाटक के संदर्भ में	147
59.	किरण सोपान सोनवलकर	स्त्री विमर्श का नया कोण : कस्बाई सिमोन	149
60.	संगिता तुकाराम सरवदे	नारी अंतर्मन को झकझोरती रचनाकार- कृष्णा अग्निहोत्री 'मैं अपराधी हूँ' के विशेष संदर्भमें	151
61.	सचिन मधूकर गुंड	'स्त्री जीवन का यथार्थ' :- 'मुन्नी मोबाईल'	153

Scanned by CamScanner

21 वे सदी के हिंदी गद्य साहित्य में बाजारवाद विमर्श

प्रा. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे
सहाय्यक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
देगलूर महाविद्यालय, देगलूर
ता. देगलूर जि. नांदेड

आज के युग में खत्म होती संवेदनशीलता भारतीय संस्कार नष्ट होने का संकेत देती है। इसी असंवेदनशीलता के कारण हमारे आस-पास हमारे समाज मे और हमारे देश मे बाजारवाद विमर्श पैदा हुआ है। इक्कीसवी सदी का आदमी समाज के बाजारवाद मे किस तरह से अंधेरा, अन्याय, अत्याचार, असंहिष्णुता और असंवेदनशीलता में गुमराह होकर अपनी मंझील तक नही पहुँच रहा है । आज का बाजारवाद इंसानो को स्वार्थी, मोहित, बनाकर आदमी को और देश को निचा दिखाने का काम कर रहा है।

इक्कीसवी सदी के इस बाजारवाद मे हम विकास की उँचाइयों को छुने का प्रयास कर रहे है। हमारा देश महासत्ता बनने का सपना तो देख रहे है।लेकीन इस भौतिक बाजारवाद मे फँसते ही जा रहे है। जैसे दुरदर्शन, दूरसंचार, फेसबुक, इंटरनेट, व्हॉट्सअॅप जैसी चिजों के गिरफ्त में आकर मानवीय मुल्यों को भुलते जा रहे है। इक्कीसवी सदी के भौतिक बाजारवाद मे आज इन्सान किस तरह से खुद गुमराह होते जा रहा है और अपने देश को भी गुमराह कर रहा है । इसलिए इस स्थिती पर हिंदी के अनेक कवियोंने अपनी भावनाँए व्यक्त की है।जैसे

" गाँव के हर चौक चौराहे पर ।
एक इंटरनेट बुथ या सायबर कॉफे
ताकि वह गाँव जुड सके संपर्ण विश्व से ।
बन सके एक ग्लोबल व्हिलेज।
तब भी बुढा बदरी ।
अपनी निस्तेज आँखो से।
घोर हताशा निराशा लिए टुटी खाट पर तोडेगा दम।
और प्रवासी बेटे को सुचना मिलेगी ई-मेल पर।"

आज किस तरह से नौजवान, युवक इस भौतिक बाजारवाद मे अपनो से दूर होते जा रहा है। माता पिता की परवरीश करने के लिए तैयार नही है। आज इक्कीसवी सदी के बाजारवाद मे मानवी मुल्यों का पतन होते जा रहा है। यह गद्य साहित्य की भावनाओं मे कवीयोंने अभिव्यक्त कियॉ है। यथार्थवादी बाजारवाद हमे अलग अलग साहित्य दिखाता है। आज इक्कीसवी सदी के बाजारवाद विमर्श की चर्चा जोरो शोरों से हो रही है। इस सदी मे सामाजिक मुल्योंपर बाजारवाद हावी होते जा रहा है। आज मानवी इच्छाऐ आकांक्षाऐं, सुख-दुख, संस्कार, नैतिकता आज के बाजारवाद युग मे कमजोर होती जा रही है। अब हमारी जरुरते हम नही बाजारवाद निश्चित कर रहा है। उपयोगवादी संस्कृती के कारण हमारी संवेदीनशीलता का और सभ्यता का पतन होते जा रहा है। आज बाजारवाद मानवीय जीवन पर हावी होते जा रहा है। इसकी झलक ललन चतुर्वेदीजी के साहित्य मे नजर आती है।

" पहले मै चित्त चुराता हूँ।
चतुराई से वित्त चुराता हूँ।
खिडकी दरवाजे बंद।
भरते रहिए निजता का दंभ।
मै हवा का तैराक धुरंधर।
मेरे लिए क्या अंदर बाहर।
हर जगह मेरी तूती बोले।
सब चूप जब बाजार बोले।"

आज इक्कीसवी सदी के बाजारवाद विमर्श मे संघर्षशील भारतीय नारी को भी दिखाया गया है। आज आधुनिकता के दौर मे नारी ने हर क्षेत्र मे अपना वर्चस्व स्थापीत करने का प्रयास इस कार्पोरेट क्षेत्र मे भी अपना हात आजमा रही है। नारी शक्तीयों को प्रबल विरोधो के बावजूद भी अपना अस्तीत्व इस बाजारवाद युग मे बनाकर रखना है। इसलिए हिंदी के लेखिकाओ ने नारी की संघर्षशीलता अपने साहित्यीक वाणी से अभिव्यक्त किया है। आज इक्कीसवी सदी के बाजारवाद विमर्श मे विदेशी असभ्यता का प्रभाव हमारे भारतीय संस्कृति पर हुआ है। इस वजह से इस युग मे आधुनिकता के नाम पर जिंदगी के हर क्षेत्र मे बाजारवाद मे घुसपैठ की है। शिक्षित बेरोजगार, नारी स्वातंत्र्य, युवा पिढी का आक्रोश, पारिवारिक विघटन, व्यक्ति स्वातंत्र्य की प्रवृत्तियाँ समाज मे तेजी से फैल रही है। इसके फलस्वरुप हमारी संस्कृती का इस बाजारवाद मे धीरे-धीरे से पतन होते जा रहा है। आज के सदी मे बाजारवाद के नाम से सिर्फ महानगरों का ही विकास हो रहा है। गाँव की तरफ यह बाजारवाद नही आ रहा है। लेकिन गाँवों से ही महानगरों का बाजारवाद खडा है। यह हमे नही भूलना चाहिए । जब अकाल गिरता है, सबसे पहले उसका असर गॉवो पर होता है, और धीरे-धीरे महानगर भी इस अकाल की चपेट मे आ जाते है। इसलिए इस बाजारवाद की नींव गावों की उपर निरभर होती है। इसलिए गॉव की तरफ भी

Scanned by CamScanner

आधुनिकता, विकास या बाजारवाद आना चाहिए। सिर्फ साहित्यीक दृष्टि से बाजारवाद विमर्श गॉव मे आया है। लेकिन मॉनिक बाजारवाद विमर्श आज भी गॉवो से कोसो दूर महानगरो मे ही स्थित है।

आज इक्कीसवी सदी के बाजारवाद विमर्श मे गॉवो की उपेक्षा, गॉवो का उजडना, नगरों का बडे पैमाने पर विस्तार, नये-नये उद्योगो की स्थापना, सामाजिक जिवन का गिरता स्तर, बिगडता पर्यावरण, आतंकवाद, उपभोक्तावाद, महंगाई, भ्रष्टाचार, घुसकांड, आधुनिक नारी की स्थिती आदि समस्याएँ इक्कीसवी सदी के बाजारवाद मे हमें नजर आती है। आज की व्यवस्था और उससे जुडी समस्याओं का यथार्थ चित्रण हमे आज के बाजारवाद मे दिखाई देता है । आज आंतकवाद एक नासूर बनकर सारी दुनियॉ के सामने चुनौती के रुप मे खडा है। हमारा देश भी और हमारा बाजारवाद भी इस समस्या से लड रहा है। हमारे अनगिनत वीर जवान और आम आदमी आंतकवाद के शिकार हूए है। आज के बाजारवाद युग मे भी आतंकवाद की समस्या हमारे सामने अपना पैर फैला रही है।इसलिए बाजारवाद विमर्श मे इस भयानकता चित्रण हमे देखने को मिल रहा है। आज इक्कीसवी सदी का बाजारवाद विमर्श इंसानो की अवसरवादी प्रवृत्ती, निराशा, घुटन और पीडा, दर्द को भी अभिव्यक्त करता है। आज आधुनिक युग मे बाजारीकरण की वजह से ग्रामिण लोगो का महानगरो की ओर पलायन का प्रमुख कारण गॉवो मे बुनियादी सुविधाओ का अभाव है, जैसे चिकित्सा, शिक्षा, रोजगार, बिजली, पानी, सडक, संचार, स्वच्छता आदि है। इनमें एक ओर प्रबल कारण शोषण और उत्पीडन भी कहा जा सकता है।

आज इक्कीसवी सदी के बाजारवाद मनुष्य के लिए वरदान से कम नही है। भौतिक सुख-सुविधाओं की सारी सुविधॉए यहा मिलती है। साथ ही सामाजिक, देश और व्यक्ति को कामयाब बनाने का कार्य आज के बाजारी युग में हमे देखने को मिलता है। बाजारवादी विमर्श मे महानगरो की ओर व्यक्ति और समाज की बातें हमे दिखाई देती है। इस आधुनिक युग मे उँची-उँची इमारते, रोजगार के साधन, मनोरंजन के साधन , समस्त साज-सज्जा के साधन व्यक्ति को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करते है। आज के बाजारवाद मे हमे हर वर्ग के लोग दिखाई देते है। जैसे उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग इन सभी वर्गो के व्यक्ति बाजारवाद युग से प्रभावित है। मनुष्य के सुख-दुःख उनकी संवेदनाओं का चित्रण साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से इक्कीसवी सदी के साहित्य में बाजारवाद विमर्श अभिव्यक्त करते है। आज बाजारीकरण में एक ओर उँची- उँची इमारती है दुसरी ओर गाँव हुऐ रोजगारों की अस्थायी झुग्गी- झोपडीयाँ है। आज का सत्य उनकी दयनीय स्थिती को उजागर करता है।

" बढती बेरोजगारी
बेचेनी चिंता, मानसिक प्रताडना,
घुटन निराशा,
छटपटाहट और बौखलाहट को लिए
दिशाहीन युवा पीढी को साथ ले
हम चल रह है।
इक्कीसवी सदी की ओर।"

यह पंक्तियाँ आज इक्कीसवी सदी के बाजारवाद पर अपना यथार्थवादी चित्रण को अभिव्यक्त करते है। आज इक्कीसवी सदी मे बाजारवाद की वजह से आर्थिक अभावों के कारण नारी, गृहिणीयों ने घर का मोर्चा भी अपने हात मे लिया है। उनकी दिनचर्या की व्यस्तता, उनके कामों का कौशल और समस्याओ पर भी आज साहित्यकारोने अपनी भावना व्यक्त की है।

इर प्रकार आज इक्कीसवी सदी के साहित्य में बाजारवाद विमर्श मे हमे अधिकतर समस्याएँ व्यक्ति का आधुनिक युग मे प्रभावित कर रहा है। आज वैज्ञानिक युग मे भारतीय,सामाजिक व्यवस्था दिशाहीन होती जा रही है। उसे उँचा उठाने कार्य एक साहित्यकार का उद्देश रहा है, और पहले भी साहित्यकार यह कर्तव्य निष्ठा से करता था।आज के दिशाहीन समाज को एक रचनाकार बाजारी युग मे भाईचारा अपना कर विशेष रुप से प्रेम का उपासक का कार्य कर रहा है। आज बाजारवाद युग मे इंसान प्रेम, शांती, मानवता के अभाव में शैतान बनते जा रहा है। कहा जाता है कि, किसान देश की रीढ की हड्डी है। लेकिन आज बाजारवाद युग मे किसानों की दशा शोचनीय है। तो हमारे बाजारवाद के हालात कैसे है यह भी हमे आज का वास्तववादी साहित्यकार अपनी रचनाओं से हमे समाज का चित्रण अभिव्यक्त कराता है।

आज इक्कीसवी सदी के बाजारवाद विमर्श मे हमे इन सभी सफलता और समस्याओं के उपर साहित्यकारो ने अपनी भावनाओं को वाणी देने का काम बाजारवाद विमर्श मे किया है।

संदर्भग्रंथ सूचि-

१. इक्कीसवी सदी मे हिंदी साहित्य स्थिती एवं संभावनाऐं – चंद्रकांत देवताले
२. हिंदी साहित्य का आधुनिक काल- वीरेंद्र मिश्र
३. चाँद पिघल रहा था- डॉ. ज्योती व्यास
४. बाजार हुं मै- लल्लन चतुर्वेदी
५. इक्कीसवी सदी मे हिंदी साहित्य स्थिती एवं संभावनाएँ – प्रा. बबन सदामते

Scanned by CamScanner

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

SPECIAL ISSUE PUBLISHED BY
AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Peer Review & Indexed Journal I Impact factor 5.707
Email id : aiirjpramod@gmail.com
www.aiirjournal.com
Mob.8999250451

Scanned by CamScanner